स्मारिका

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की

महात्मा गाँधी स्मरणोत्सव

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय नई दिल्ली पत्रांक सं० 3072
दिनांक 26 जुलाई 2018 के अनुपालन में सत्र पर्यन्त आयोजित गतिविधियाँ

तुम्हें नमन!

चल पड़े जिधर दो डग, मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
उठ गई जिधर भी एक दृष्टि
उठ गये कोटि दृग उसी ओर,

युग बढ़ा तुम्हारी हँसी देख
युग हटा तुम्हारी भृकुटी देख,
तुम अचल मेखला बन भू की
खींचते काल पर अमिट रेख,

तुम बोल उठे युग बोल उठा
तुम मौन रहे, जग मौन बना,
कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर
युग कर्म जगा, युग धर्म तना,

तुम युग परिवर्तक, युग संस्थापक
युग संचालक, हे युगधारा!
युग निर्माता, युग मूर्ति तुम्हें
युग-युग तक युग का नमस्कार!

दृढ़ चरण, सुदृढ़ कर संपुट से
तुम काल चक्र की चाल रोक,
नित महाकाल की छाती पर
लिखते करुणा के पुष्प श्लोक!

हे युगदृष्टा, हे युग सृष्टा,
पढ़ते यह कैसा मोक्ष मंत्र?
इस राजतंत्र के खंडहर में
आता अभिनव भारत स्वतन्त्र!

सोहन लाल द्विवेदी

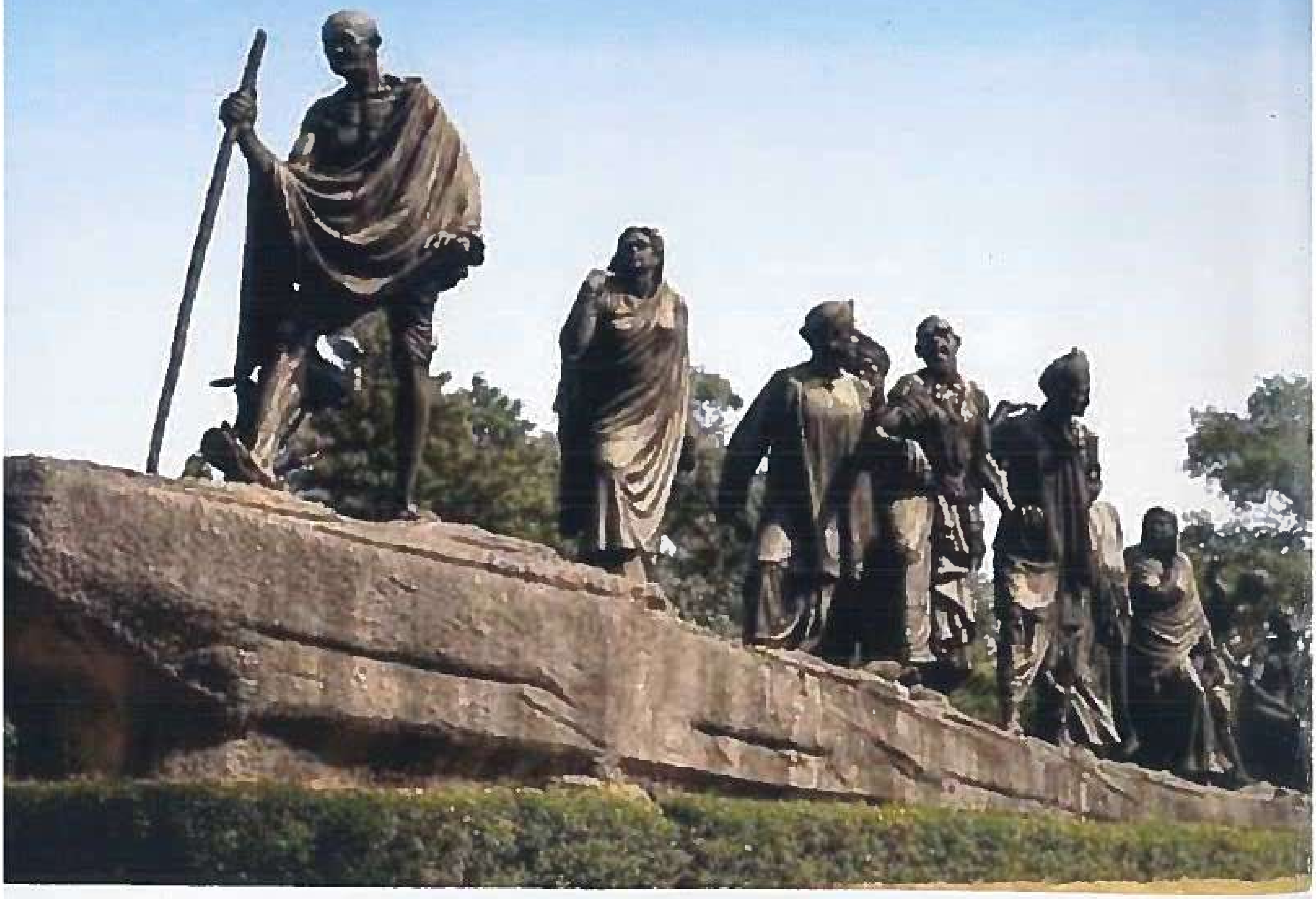

स्मारिका

महात्मा गाँधी स्मरणोत्सव

2 अक्टूबर 2018 से 2 अक्टूबर 2019

YEARS OF
CELEBRATING
THE MAHATMA

संरक्षक
श्री अजय गर्ग
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

संकल्पना एवं मार्गदर्शन
डा० अर्चना मिश्रा, प्राचार्या

आयोजन समिति
डा० कामना जैन, समन्वयक
डा० किरन बाला, सह समन्वयक

परामर्श
डा० अनुपमा गर्ग

आवरण एवं अंत:सज्जा
डा० अलका आर्य

विशेष सहयोग

डा० भारती शर्मा	डा० सीमा राय
डा० अर्चना चौहान	डा० संगीता सिंह
श्रीमती अंजलि प्रसाद	श्रीमती अंशु गोयल
श्रीमती मिनाक्षी	डा० अंजू शर्मा

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की

भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय नई दिल्ली पत्रांक सं० 3072
दिनांक 26 जुलाई 2018 के अनुपालन में सत्र पर्यन्त आयोजित गतिविधियाँ

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

संकल्प

गाँधी जी के विचारों व आदर्शों से वर्तमान युवा पीढ़ी को अवगत कराने के उद्देश्य से महाविद्यालय में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन सत्रपर्यन्त किया गया, किन्तु गाँधी विचारधारा अनन्त है। गाँधी स्मरणोत्सव वर्ष की समाप्ति के साथ गाँधी विचार दर्शन यहीं नहीं रुकेगा, वरन् आगामी वर्षों में भी पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता अभियान, वैश्विक शान्ति, सर्वधर्म समभाव आदि पर आधारित विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से महाविद्यालय गाँधी दर्शन को अनवरत् प्रवाहित रखने हेतु सतत् कार्यरत रहेगा।

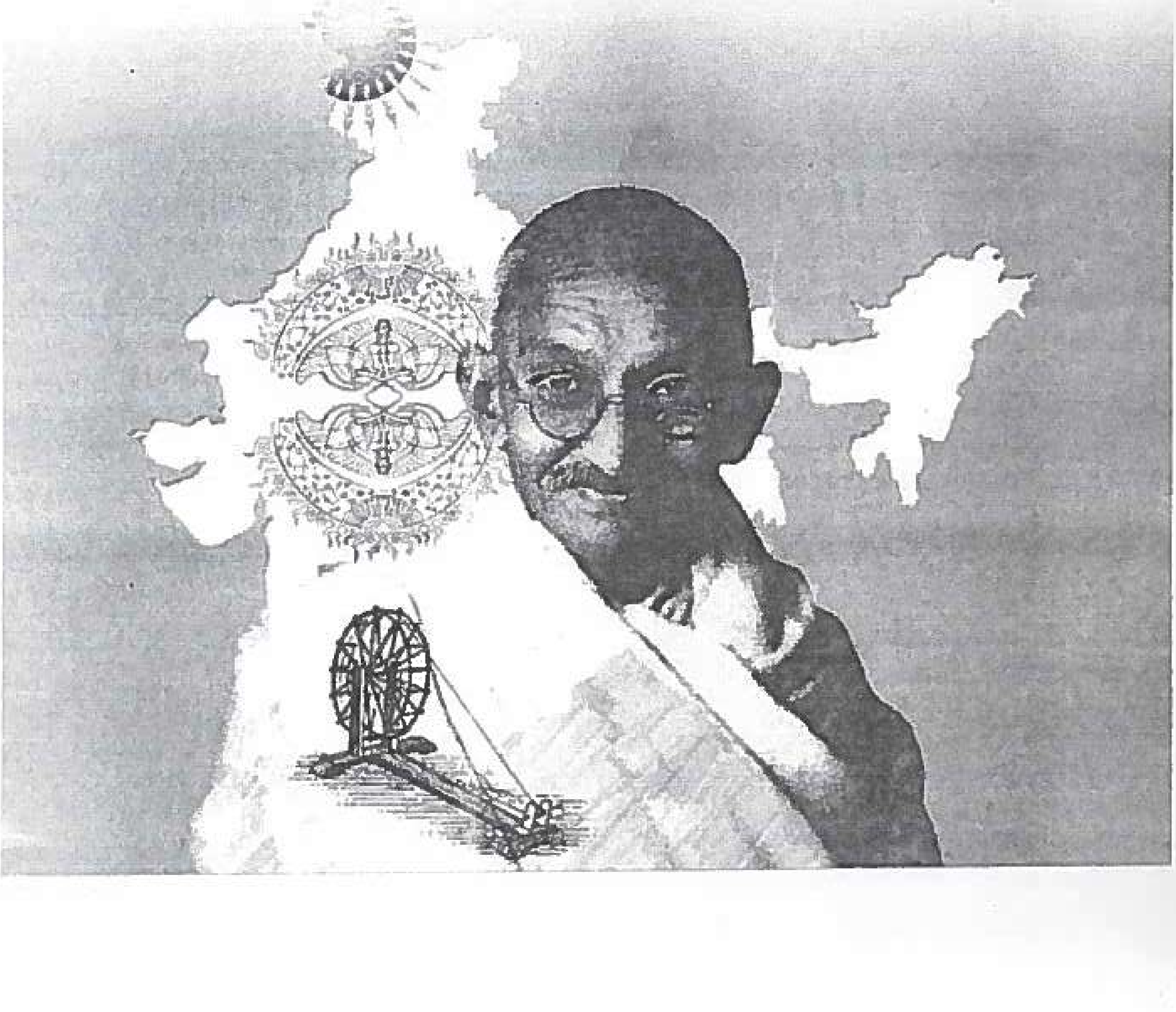

शुभकामना संदेश

महाविद्यालय द्वारा आयोजित गांधी स्मरणोत्सव कार्यक्रम श्रृंखला हमारी गौरवशाली संस्था की मूल्य आधारित शिक्षण परंपरा में एक और मील का पत्थर है। महात्मा जी के विचार किसी एक देश की सीमाओं में नहीं बंधे रहे। जीवन की छोटी-छोटी बातों जैसे सत्य, अहिंसा, धैर्य, क्षमा को उन्होंने अपने नियमित आचार-व्यवहार का अंग बनाया और इन सनातन मूल्यों पर आधारित उनका जीवन व कार्यप्रणाली आज डेढ़ सदी बाद भी सम्पूर्ण मानवता का प्रेरणास्त्रोत बनी हुई है। आशा है इस कार्यक्रम-श्रृंखला के माध्यम से हमारी बालिकाओं को सदी के इस महामानव के व्यक्तित्व व जीवन मूल्यों से नये सिरे से परिचित होने का अवसर मिला होगा। महात्मा के विचारों को समझ के साथ निश्चित ही वे एक बेहतर दुनिया का सपना पूरा करने की दिशा में सार्थक योगदान दे सकेंगी।

इस सराहनीय प्रयास के लिये प्राचार्या, कार्यक्रम समन्वयक व समस्त प्राध्यापिका वर्ग को हार्दिक शुभकामनायें।

अजय गर्ग
अध्यक्ष प्रबंध समिति

महात्मा गाँधी की 150 वीं जयंती पर पूरे वर्ष चली यह कार्यक्रम श्रृंखला राष्ट्रपिता के अप्रतिम व्यक्तित्व को सच्ची श्रंद्धाजंलि है। बेहद सादा जीवन जीने वाले गाँधी जी की सरल अंदाज में की गई बातें सीधे जन साधारण के दिलों तक पहुँचती थी क्योंकि कोई भी विचार आगे बढ़ाने से पहले वे उसे अपने आचरण का हिस्सा बनाते थे।

आशा है इस कार्यक्रम श्रृंखला के माध्यम से प्राप्त विचार हमारी बालिकाओं के भावी जीवन में उच्च आदर्शों की आधारशिला बनेगें और वे सुयोग्य नागरिक के रूप में राष्ट्र व समाज के नवनिर्माण हेतु प्रेरित होगी।

इस सफल एवम् उद्देश्यपरक कार्यक्रम के आयोजकों को बधाई व छात्राओं को सुंदर सफल भविष्य हेतु अग्रिम शुभकामनायें।

दिनेश गुप्ता
उपाध्यक्ष प्रबंध समिति

शुभकामना संदेश

महात्मा गाँधी जैसे सदी के विलक्षण व्यक्तित्व की 150वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में वर्षपर्यन्त संचालित कार्यक्रमों की श्रृंखला महाविद्यालय के लिए गौरव का विषय है। गाँधी जी की सोच और कार्यों ने उनके जीवनकाल में ही वैश्विक विस्तार ले लिया था। महात्मा के सादगीपूर्ण जीवन और ऊँचे विचारों से युवा पीढ़ी को परिचित कराने का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है क्योंकि यही पीढ़ी आज की शिक्षा से संचित जीवनमूल्यों व संस्कारों को भविष्य तक लेकर जायेगी। इस उत्तम आयोजन हेतु समस्त महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई।

तेज बहादुर
सचिव प्रबंध समिति

महात्मा गाँधी की 150 वीं जयन्ती के अवसर पर उनके जीवन व कार्यों से महाविद्यालय में अध्ययनरत नई पीढ़ी को परिचित कराने के उद्देश्य से पूरे वर्ष संचालित 'स्मरणोत्सव' महाविद्यालय का एक अभूतपूर्व प्रयास है। इतने वर्षों बाद भी महात्मा गाँधी के विचार वर्तमान विश्व में अपनी उपयोगिता बनाये हुए हैं। आजादी के बड़े लक्ष्य को लेकर चलते हुए भी मानव-जीवन का कोई भी पहलू उनके चिन्तन से अछूता नहीं रहा।

यह कार्यक्रम शांति के इस मसीहा के कालजयी चिन्तन को महाविद्यालय परिवार की छोटी सी श्रृद्धांजलि है। इस सुविचारित, सार्थक पहल के लिए आयोजन से जुड़े सभी लोगों को कोटिशः साधुवाद।

सौरभ भूषण
कोषाध्यक्ष प्रबंध समिति

संदेश

'मेरा जीवन ही मेरी वाणी है' कहने वाले गाँधी जी का व्यक्तित्व एवं विचार आज भी विश्व की अनेक ज्वलंत समस्याओं के संदर्भ में प्रासंगिक हैं। पूरे एक वर्ष चली यह 'स्मरणांजलि' महात्मा गाँधी के सम्पूर्ण जीवन दर्शन को विविध कार्यक्रमों के माध्यम से समग्रता में रेखांकित करने का एक छोटा सा प्रयास है। आजादी की लड़ाई में अपनी केन्द्रीय भूमिका के साथ-साथ मानव भी सदैव उनके चिन्तन के केन्द्र में रहा। यही कारण है कि सत्य, अहिंसा, प्रेम व क्षमा जैसे शाश्वत मानवीय मूल्यों के प्रसार एवं गरीबी, छुआछूत, शोषण सांप्रदायिकता आदि सामाजिक बुराइयों के खिलाफ वे जीवन भर सक्रिय रहे। यही नहीं पर्यावरण तथा विकास संबंधी उनके विचार भी अपने समय से बहुत आगे थे। उन्होंने सदा प्राकृतिक साधनों को ईश्वरीय उपहार मानकर, भावी पीढ़ियों को ध्यान में रख इनके उपयोग पर जोर दिया।

महाविद्यालय गतवर्षों में 'स्वच्छ भारत अभियान' में निरन्तर सक्रिय रहा है और आज कार्यक्रम के समापन के अवसर पर पर्यावरणीय चेतना के प्रसार का संकल्प वस्तुत: गाँधी के ही चिन्तन को आने वाले वर्षों तक लेकर जायेगा। हम 'गाँधी स्मरणोत्सव' का समापन कर रहे हैं पर गांधी का कालजयी चिन्तन सदैव हमारे साथ रहेगा .. हमें दिशा देता तथा मानवता का पथ प्रकाशित करता।

इस आयोजन को सफल बनाने के लिए महाविद्यालय के प्रगतिकामी प्रबंधन को हार्दिक धन्यवाद व उत्साही छात्रावृंद, कर्मचारी-बन्धुओं तथा प्रबुद्ध-प्राध्यापिका वर्ग को अनेकों शुभकामनायें।

डा0 अर्चना मिश्रा
प्राचार्या

आभार

डा0 कामना जैन
समन्वयक

डा0 किरनबाला
सह समन्वयक

महात्मा गाँधी जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व स्थान, काल की सीमाओं से बहुत आगे रहा है। वैश्विक स्तर पर उनके विचारों की प्रासंगिकता ही उन्हें 'मोहन' से 'महात्मा' व 'राष्ट्र प्रमुख' से 'राष्ट्रपिता' तक पहुँचाती है।

उनके जीवन मूल्य एवं आदर्शों से युवा पीढ़ी को परिचित कराने के लिए हमारे महाविद्यालय में 2 अक्टूबर 2018 से 2 अक्टूबर 2019 तक 'गाँधी स्मरणोत्सव' के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वप्रथम हम अपने प्रगतिशील प्रबन्ध तन्त्र का हृदय की तलस्पर्शी गहराइयों से आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सौजन्य से इस स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

सत्रपर्यन्त समस्त गतिविधियों के सफल संचालन के लिए हम अपनी प्राचार्या को आभार व्यक्त करते हैं जिनके प्रोत्साहन तथा अनुभवी दिशा निर्देशन में ये गतिविधियाँ सम्पन्न हुई। हम महाविद्यालय की कर्त्तव्यनिष्ठ प्राध्यापिका वर्ग का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं जिनकी दूरगामी दृष्टि व सहयोग से कार्यक्रमों में विविधता तथा गाँधी दर्शन का समग्रता में प्रस्तुतीकरण संभव हो सका। साथ ही समस्त गतिविधियों के आयोजन में हर स्तर पर सहयोग के लिए कार्यालय सहयोगियों व कर्मचारी बन्धुओं सभी का बहुत आभार।

गाँधी स्मरणोत्सव 150 वीं जन्मशती वर्ष - 2018-19

दिशा निर्देशन : डा० अर्चना मिश्रा समन्वयक - डा० कामना जैन, सह-समन्वयक - डा० किरन बाला

दिनाँक	आयोजक	गतिविधि का विवरण
22 सित. 2018 24 सित. 2018 29 सित. 2018	ग्रीन ब्रिगेड N.S.S.	स्वच्छता पखवाड़ा (15 सित. से 2 अक्टू. 2018) संयोजिका - डा० अनुपमा गर्ग, डा० भारती शर्मा, डा० किरन बाला, सुश्री अंजलि प्रसाद, श्रीमती अंशु गोयल
27 से 29 सित. 2018	Reading Gandhi	**Library Session** संयोजिका - डा० कामना जैन, राजनीति विज्ञान विभाग
2 अक्टू 2018	N.S.S.	स्वच्छता रैली, नुक्कड़ नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम संयोजिका - डा० भारती शर्मा
30 अक्टू 2018	समाजशास्त्र विभाग	दिशा भित्ति पत्रिका: **Remembering Gandhi** संयोजिका - डा० किरन बाला, सुश्री अंजलि प्रसाद
2 नवम्बर 2018	हिन्दी विभाग	पत्र लेखन- बापू आप मेरे प्रेरणा स्रोत है। संयोजिका - डा० सीमा रॉय, डा० अंजू शर्मा
2 नवम्बर 2018	राजनीति विभाग	चित्र प्रदर्शनी **Memories of Gandhi** संयोजिका - सुश्री प्रवीन, डा० मधुलिका मिश्रा
4 दिस. 2018	हिंदी विभाग	कविता पाठः गाँधी पर संकलित कविताऐं संयोजिका - डा० अंजू शर्मा
10 दिस. 2018	राजनीति विभाग अर्थशास्त्र विभाग	फिल्म प्रदर्शन: रिचर्ड एटनबरो द्वारा निर्देशित - 'गाँधी' **PPT Presentation - Gandhi & his Life** संयोजिका - डा० कामना जैन, श्रीमती नेहा शर्मा
30 जन. 2019	--	हस्ताक्षर अभियान-'अहिंसा परमो धर्मः' संयोजिका - डा० सीमा रॉय, डा० शिखा शर्मा, श्रीमती नेहा शर्मा, श्रीमती प्रीति शर्मा
7 मार्च 2019	चित्रकला विभाग	**Calligraphy**- 'गाँधी के प्रेरक कथन' संयोजिका - डा० अलका आर्य
2 अप्रैल 2019	सामाजिक विज्ञान परिषद्	**Inter University Debate Competition 'Relevance of Gandhian Ideology in Present Scenorio'** संयोजिका - डा० कामना जैन, डा० किरन बाला, सुश्री अंजलि प्रसाद, श्रीमती नेहा शर्मा, डा० मधुलिका मिश्रा
23 अगस्त 2019	सामाजशास्त्र विज्ञान	निबन्ध लेखन प्रतियोगिता: गाँधी जी और आज का समय संयोजिका - डा० किरन बाला, सुश्री अंजलि प्रसाद
21 सितम्बर 2019	चित्रकला विभाग	पोस्टर प्रतियोगिता : हमारे प्रिय बापू संयोजिका - डा० अर्चना चौहान, श्रीमती मीनाक्षी
23 सितम्बर 2019	अंग्रेजी विभाग	विचार लेखन प्रस्तुति : प्रणाम बापू संयोजिका - डा० अनुपमा गर्ग, कु० महनाज

दिनाँक	आयोजक	गतिविधि का विवरण
24 सितम्बर 2019	जन्तु विज्ञान	**वृक्षारोपण कार्यक्रम** **संयोजिका** – डा० संगीता सिंह, कु० शाज़िया
27 सितम्बर 2019	एन.एस.एस. समस्त महाविद्यालय	**जन जागरुकता रैली-स्वच्छता एवं प्लास्टिक मुक्त भारत, जल संरक्षण, प्रकृति विश्व शांति, संरक्षण** **संयोजिका** – डा० भारती शर्मा, डा० कामना जैन, डा० किरन बाला, डा० अर्चना चौहान, सुश्री अंजलि प्रसाद
1 अक्टूबर 2019	सांस्कृतिक समिति	**गाँधी स्मृति दीर्घा प्रदर्शनी** **संयोजिका** – डा० अर्चना चौहान, सुश्री अंजलि प्रसाद, डा० सीमा राय, श्रीमती अंशु गोयल
2 अक्टूबर 2019	गाँधी महोत्सव समिति	**सांस्कृतिक कार्यक्रम** **संयोजिका** - डा० कामना जैन, डा० किरन बाला
22 अक्टूबर 2019	विशिष्ट सांस्कृतिक प्रस्तुति	**आई.आई.टी. रुड़की, द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार में सांस्कृतिक प्रस्तुति** विषय: Gandhian Thought & Philosophy (22-23 Oct. 2019)

कार्यक्रमों की श्रृंखला को विराम देते हुए आज गाँधी स्मरणोत्सव कार्यक्रम का समापन किया गया किन्तु गाँधी दर्शन एवं गाँधी शिक्षा अनवरत रूप से चलती रहेगी।

बापू के प्रति

तुम मांस-हीन, तुम रक्तहीन, हे अस्थि-शेष! तुम अस्थिहीन,
तुम शुद्ध-बुद्ध आत्मा केवल, हे चिर पुराण, हे चिर नवीन!
तुम पूर्ण इकाई जीवन की, जिसमें असार भव-शून्य लीनय
आधार अमर, होगी जिस पर भावी की संस्कृति समासीन!

सुख-भोग खोजने आते सब, आये तुम करने सत्य खोज,
जग की मिट्टी के पुतले जन, तुम आत्मा के, मन के मनोज!
जड़ता, हिंसा, स्पर्धा में भर चेतना, अहिंसा, नम्र-ओज,
पशुता का पंकज बना दिया तुमने मानवता का सरोज!

उर के चरखे में कात सूक्ष्म युग-युग का विषय-जनित विषाद,
गुंजित कर दिया गगन जग का भर तुमने आत्मा का निनाद।

– सुमित्रा नन्दन पंत

गाँधी स्मरणोत्सव कार्यक्रम श्रृंखला
(2 अक्टूबर 2018 – 2 अक्टूबर 2019)

27 – 29 सितम्बर 2018, पुस्तकालय सत्र: 'गाँधी को जानो'

गाँधी साहित्य को पढ़े बिना वर्तमान पीढ़ी गाँधी दर्शन को नहीं समझ सकती। वैसे भी आज के डिजिटल युग में पुस्तक अध्ययन को प्रेरित करना अति आवश्यक है। इन्हीं उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए महाविद्यालय में त्रिदिवसीय पुस्तकालय सत्र का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत पुस्तकालय में उपलब्ध गाँधी साहित्य को अलमारियों से बाहर रखा गया और छात्राओं ने गाँधी जी के विभिन्न विचारों का अध्ययन किया एवं सामूहिक चर्चा का लाभ उठाया।

2 अक्टूबर 2018, गाँधी जयन्ती

महाविद्यालय में रा० से० यो० ईकाई की ओर से गाँधी जयन्ती हर्ष एवं उल्लास के साथ मनायी गई छात्राओं द्वारा स्वच्छता रैली, दोड़ी मार्च का आयोजन, गाँधी जी के भजन, उनके विचारों पर प्रस्तुति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

30 अक्टूबर 2018 – दिशा भित्ति पत्रिका: Remembering Gandhi

गाँधी स्मृति विषय पर आधारित दिशाभित्ति पत्रिका के अन्तर्गत छात्राओं ने गाँधी जी से जुड़ी स्मृतियों एवं विचारों को विस्तार पूर्वक भित्ति पत्रिका के माध्यम से प्रदर्शित किया। जिसमें छात्राओं ने पोस्टर, कविता, लेख, स्वरचित रचनाओं के माध्यम से गाँधी दर्शन की झलकियाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया। गाँधी जी दांडी यात्रा एवं उनके प्रसिद्ध मंत्रों का चित्रण आकर्षण का केन्द्र रहा। प्रदर्शित दिशा भित्ति के उपरान्त छात्राओं के लिए दिशा प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। जिसमें छात्राओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

2 नवम्बर 2018 – पत्र लेखन प्रतियोगिता एवं स्मृति चित्रशाला

महाविद्यालय में 'मेरे प्रिय बापू' शीर्षक पर आधारित पत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं ने राष्ट्रपिता के प्रति अपनी भावनाएं उजागर करते हुए बताया कि वे बापू के किन विचारों से सर्वाधिक प्रेरित हैं, व अपने जीवन में उनका अनुकरण करना चाहते हैं। इसी के साथ गाँधी जी के जीवन के महत्वपूर्ण यादगार पलों की तस्वीरों को 'गाँधी स्मृति चित्रशाला' के रूप में प्रदर्शित किया गया जिसमें गाँधी जी के बचपन से लेकर कस्तूरबा जी के साथ विवाह, इंग्लैण्ड में वकालत, दांडी यात्रा, साबरमती आश्रम की तस्वीरों के साथ-2 नेहरू, पटेल, सुभाष चन्द्र बोस, चार्ली चैपलिन, लार्ड एवं लेडी माउण्टबेटन, इंदिरा गाँधी, रविन्द्र नाथ टैगोर, आभा एवं मधुबेन आदि के साथ बिताए गए यादगार लम्हों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया गया।

4 दिसम्बर 2018 – कविता पाठ

गाँधी स्मरणोत्सव वर्ष के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला के अन्तर्गत राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को समर्पित गणमान्य कवियों की लेखनी से विसरित कविताओं के पाठ का आयोजन कराया गया। छात्राओं ने उत्साहपूर्वक इसमें प्रतिभागिता की और काव्य के माध्यम से बताया कि महात्मा गाँधी केवल भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के आदर्श हैं। राजनीतिज्ञ ना होते हुए भी सम्पूर्ण जीवन काल में राजनीति के केन्द्र बिंदु रहे, संसार से विरक्त ना होते हुए भी एक सच्चे संत थे।

10 दिसम्बर 2018 – मानव अधिकार दिवस पर विभिन्न गतिविधियाँ

मानव अधिकार दिवस पर मानवता के अनन्तम् पुजारी एवं कर्मयोगी महात्मा गाँधी को स्मरित किया गया। छात्राओं के लिए प्रात: कालीन सत्र में रिचर्ड एटनबरो द्वारा निर्देशित फीचर फिल्म 'गाँधी' का प्रदर्शन छात्राओं हेतु किया गया। इसके पश्चात प्रेजेन्टेशन PPT के माध्यम से गाँधी जी के व्यक्तित्व एवं विचारों को साझा करने का प्रयास किया गया। जिसमें प्रमुख विषय गाँधी के सत्याग्रह, औद्योगीकरण, तथा नारी विषयक विचार थे। आज ही के दिन गाँधी जी के प्रति हिंदी साहित्य का योगदान विषय पर दिशा भित्ति पत्रिका का भी आयोजन किया गया। जिसमें गाँधी जी को समर्पित अथाह हिंदी साहित्य में से मंथन करके महत्वपूर्ण विचारों को उद्धृत किया गया।

30 जनवरी 2019 – हस्ताक्षर अभियान: 'अहिंसा परमो धर्म:'

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की पुण्य तिथि के अवसर पर हस्ताक्षर अभियान आयोजित किया गया। जिसमें गाँधी जी के जीवन के मूल मंत्र– 'सत्य व अहिंसा मेरे दो फेफड़ों के समान हैं'' को आधार बनाते हुए ''अहिंसा परमो धर्म:'' विषय पर महाविद्यालय में वृहद स्तर पर हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। आज के विश्व में सर्वत्र हिंसा और युद्ध की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ रही है। तो मानव मात्र को युद्ध की विभीषिका से बचाने हेतु प्रेम, अहिंसा, शांति व भाईचारे को बढ़ावा देने के संदेश को आगे बढ़ाने हेतु यह प्रयास किया गया।

7 मार्च 2019 – सुलिपि प्रतियोगिता: 'गाँधी जी के प्रेरक कथन'

''आमार जीवन- आमार बानी'' कहने वाले महात्मा गाँधी जी का जीवन सदैव प्रेरणास्रोत रहा है। गाँधी जी के द्वारा समय-समय पर उद्धृत् प्रेरक वचनों पर आधारित सुलिपि प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

2 अप्रैल 2019 – अंतर्विश्वविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता-

विषय: वर्तमान परिदृश्य में गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता

आज की युवा पीढ़ी गाँधी जी को कितना समझती है व वर्तमान परिदृश्य में गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता को जानने के लिए इस वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं ने खुलकर अपने विचार रखे। विषय के विपक्ष में बोलते हुए प्रतिभागी छात्राओं ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियाँ भूतकाल से नितान्त विपरीत हैं आज के युग में हम गाँधीवाद को अपना कर ना तो आर्थिक प्रगति कर सकते है, ना ही राष्ट्र की एकता अखण्डता को सुरक्षित बनाए रखा जा सकता है। किंतु विषय के पक्ष में बोलते हुए प्रतिभागी छात्राओं ने कहा कि आज के वैश्विक परिदृश्य की पर्यावरण ह्रास, धार्मिक-उन्माद, आतंकवाद, अन्याय-असमानता, बेरोजगारी आदि विभिन्न समस्याओं का समाधान केवल गाँधी दर्शन को अपनाकर ही संभव है।

23 अगस्त 2019 निबन्ध लेखन प्रतियोगिता: गाँधी जी एवं आज का समय

समाजशास्त्र विभाग की ओर से गाँधी जी एवं आज का समय विषय पर निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया तथा अपने विचारों को रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया।

21 सितम्बर 2019 – पोस्टर प्रतियोगिता एवं विचार लेखन प्रस्तुति

'हम सबके थे प्यारे बापू' शीर्षक से पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन चित्रकला विभाग द्वारा किया गया। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा पैंसिल शेड एवं रंग-बिरंगे रंगों द्वारा महात्मा गांधी को उकेरने का भरपूर प्रयास किया गया।

'प्रणाम बापू' शीर्षक के अन्तर्गत अंग्रेजी विभाग द्वारा विचार लेखन प्रस्तुति का आयोजन किया गया। इसमें छात्राओं ने गाँधी जी के विचारों की सार्वभौमिकता को केन्द्र में रखते हुए शब्दों के माध्यम से बापू को नमन किया।

24 सितम्बर 2019 पर्यावरण संरक्षण

राष्ट्रपिता धरती के संरक्षण के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक चिकित्सा अपनाने को सदैव प्रेरित करते थे। पर्यावरण संरक्षण की मुहिम को आगे बढ़ाते हुए जन्तु विज्ञान विभाग के द्वारा औषधीय वाटिका के माध्यम से बापू को स्मरित किया गया। छात्राओं द्वारा तुलसी, नीम, अजवाइन, गिलोय, आँवला, अश्वगंधा, एलोवेरा, आदि विविध औषधीय पौधों का रोपण किया गया।

27 सिम्बर 2019 रैली द्वारा गाँधी के सपनों को किया गुँजायमान

गाँधी स्मरणोत्सव कार्यक्रमों के अन्तर्गत महाविद्यालय की छात्राओं ने रैली में बढ़ चढ़ कर प्रतिभागिता की। रैली केमाध्यम से राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों के प्रति जन जागृति लाने का प्रयास किया गया। छात्राओं ने स्वच्छता एवं प्लास्टिक मुक्त भारत, जल संरक्षण, पेड़ बचाओ-प्रकृति बचाओ, विश्व शांति एवं सर्वधर्म समभाव सम्बन्धी नारे लगाकर सम्पूर्ण नगर को गुँजायमान किया।

01 अक्टूबर 2019 गाँधी स्मृति दीर्घा

गाँधी जयन्ती के एक दिन पूर्व महाविद्यालय की सांस्कृतिक समिति द्वारा गाँधी स्मृति दीर्घा का आयोजन किया गया, जिसमें गाँधी जी से जुड़ी वस्तुऐं यथा चरण पादुका, चश्मा, खादी कुर्ता, धोती, गाँधी जी की व्यक्ति विशेष के साथ संकलित कुछ विशिष्ट तस्वीरें, गाँधी जी के द्वारा कहे गए प्रेरक कथनों पर आधारित कैलीग्राफी, साथ ही उनके जीवन काल से जुड़ी कुछ प्रमुख स्मृतियों को प्रदर्शित किया गया। समाजशास्त्र विभाग की छात्राओं द्वारा गाँधी जी के बताए मार्ग-सर्वधर्म समभाव पर आयोजित मूक नाटिका का भी प्रदर्शन किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई द्वारा गाँधी जी की परछाई स्वरूप उनके जीवन सम्बन्धी कुछ स्मृतियाँ प्रस्तुत की गई तथा महाविद्यालय स्तर पर सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त भारत की शपथ दिलाई गई।

02 अक्टूबर 2019 राष्ट्रीय पर्व- गाँधी जयन्ती

महाविद्यालय में गाँधी जी की 150 वीं वर्षगाँठ हर्षोल्लास से मनाते हुए सत्रपर्यन्त चल रहे गाँधी स्मरणोत्सव कार्यक्रमों का समापन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण गाँधी जी की वर्तमान में प्रासंगिकता पर आधारित लघु नाटिका, बापू के प्रिय भजन 'वैष्णव जनतो तेने कहिए' पर शास्त्रीय नृत्य, आजा रे बापू आजा रे पर नृत्य, तथा कलकत्ता दंगे के संदर्भ में व गाँधी की भूमिका पर आधारित नाटिका का प्रदर्शन किया गया।

22 अक्टूबर 2019 राष्ट्रीय सेमीनार

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार Gandhian Thought & Philosophy के उद्घाटन सत्र में छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति।

महात्मा के मंत्र

- अहिंसा और सत्य मेरे दो फेफड़े हैं, मैं उनके बिना जी नहीं सकता।
- सत्य वज्र के समान कठिन है और कमल के समान कोमल है।
- यदि आत्मा एक ही है, ईश्वर एक ही हैं, तो अस्पृश्य कोई भी नहीं।
- कोई न कोई दिन ऐसा जरूर आयेगा, जब जगत शान्ति की खोज करता-करता भारत में आयेगा और भारत तथा सारा एशिया समस्त संसार की ज्योति बनेगा।
- यह नहीं होना चाहिए कि मुट्ठी भर अमीर लोग रत्नजडित महलों में रहे और करोड़ों लोग वायु और प्रकाशहीन गन्दे झोपड़ों में रहें।
- मानव सेवा ही माधव सेवा है।
- आदम खुदा नहीं पर खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं।
- सत्य साध्य है अहिंसा एक साधन है।
- यदि आप सत्य के महासागर के बल पर तैरना चाहते हैं तो आपको शून्य बन जाना होगा।
- अहिंसा वीर का लक्षण है, कायरता कभी धर्म नहीं हो सकती, आत्मबल के सामने तलवार का बल तृणबल है, अहिंसा आत्मा का बल है।
- शांति से ज्यादा आक्रामक कुछ भी नहीं।
- हम सबके भीतर सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता है और यही हम इंसानों को पशु से बेहतर बनाती है।
- खुद वो बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।
- व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता है।
- एक विनम्र तरीके से, आप दुनिया को हिला सकते हैं।
- आँख के बदले आँख पूरे विश्व को अँधा बना देगी।
- शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं आती है। यह एक अदम्य इच्छाशक्ति से आती है।
- आपकी मान्यताएें आपके विचार बन जाते हैं, आपके विचार आपके शब्द बन जाते हैं, आपके शब्द आपके कार्य बन जाते हैं, आपके कार्य आपकी आदत बन जाते हैं, आपकी आदतें आपके मूल्य बन जाते हैं आपके मूल्य आपकी नियति बन जाती है।

– संकलित

गाँधी स्मरणोत्सव – कार्यक्रम श्रृंखला

अध्यक्ष महोदय एवं अन्य अतिथियों द्वारा कार्यक्रम शुभारंभ

महाविद्यालय परिवार एवं प्रतिभागी छात्राएं

गाँधी स्मरणोत्सव – कार्यक्रम श्रृंखला
गाँधी स्मृति दीर्घा

मुख्य अतिथि द्वारा माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन

अतिथि स्वागत

अतिथियों द्वारा प्रदर्शनी अवलोकन

गाँधी स्मृति दीर्घा में उपस्थित मुख्य अतिथि एवं महाविद्यालय परिवार

प्रदर्शनी अवलोकन के उपरांत प्रतिक्रिया देते अतिथि

गाँधी स्मरणोत्सव – कार्यक्रम श्रृंखला
सांस्कृतिक कार्यक्रम

सर्व धर्म समभाव पर आधारित मूक नाटिका

आजा रे बापू आजा एवं वैष्णव जन तो तेने कहिए पर नृत्य प्रस्तुति

गाँधी एवं कलकत्ता के दंगे विषय पर आधारित नाटिका

अंतर्विश्वविद्यालयी वाद–विवाद प्रतियोगिता

आई.आई.टी. रुड़की के राष्ट्रीय सेमीनार में छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति

गाँधी स्मरणोत्सव – कार्यक्रम श्रृंखला
शैक्षणिक एवं अन्य कार्यक्रम

गाँधी जीवन दर्शन पर आधारित PPT प्रस्तुतीकरण

अहिंसा परमो धर्मः हस्ताक्षर अभियान

गाँधी के प्रेरक कथनों पर आधारित कैलीग्राफी प्रतियोगिता

महात्मा गाँधी पुस्तकालय आई.आई.टी. रुड़की भ्रमण

गाँधी स्मृतिशाला

पत्र लेखन प्रतियोगिता – हमारे प्रिय बापू

गाँधी स्मरणोत्सव दिशा भिति पत्रिका

जन जागरुकता अभियान

पर्यावरण संरक्षण : औषधीय वाटिका

स्वच्छता पखवाड़ा

एकं सत्

सत्य : महात्मा गाँधी का ईश्वर

डा॰ अर्चना मिश्रा
प्राचार्या

'मैं कितना भी तुच्छ होऊँ पर जब मेरे माध्यम से सत्य बोलता है तो मैं अजेय हो जाता हूँ।' – महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाले एक धार्मिक व्यक्ति थे। किसी भी स्थान व परिस्थिति में वे अपने नित्य पूजन से विरत नहीं होते थे। प्रार्थना सभा बापू के जीवन का अभिन्न अंग थी। ईशावास्योपनिषद के प्रथम श्लोक की पहली पंक्ति 'ईशावास्य सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्' से प्रारंभ होने वाली उनकी प्रार्थना सभायें उनकी आस्तिकता की द्योतक हैं। पर एक ईश्वरवादी और धार्मिक व्यक्ति होने के बावजूद उन्होंने मनुष्य के धर्म की कसौटी व्रत-पूजन, धार्मिक कर्मकांड नहीं बल्कि उसके आचरण को माना। उनके जीवन के आधार भूत मूल्य प्रतिदिन उनकी प्रार्थना सभा में एकादश व्रत के रूप में याद किये जाते थे-

'अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह/शरीर श्रम, अस्वाद, सर्वत्र भय वर्जन,
सर्वधर्म-समानता, स्वदेशी स्पर्श भावना/विनम्र व्रतनिष्ठा ये एकादश सेव्य है।'

इनमें से भी 'सत्य' को उन्होंने अपने जीवन में सर्वोपरि स्थान दिया। सार्वजनिक सेवा के जीवन में पदार्पण के समय उनका मानना था कि समस्त सृष्टि का मूल शिवमय, सत्यमय और चिन्मय ईश्वर ही सर्वकल्याणकारी और सत्य है। किन्तु कालांतर में ईश्वर का मर्म समझने के अपने प्रयासों के फलस्वरूप गांधी जी की आस्था मानवमात्र के लिए कल्याणकारी सत्य और अहिंसा के मूल्यों पर दृढ़ से दृढ़तर होती गई और वैदिक उक्ति 'सत्यान् नास्ति परोधर्मः' ही उनके जीवन का आधार बन गई।

आधुनिक विश्व में सत्य को जितना समादर गांधी ने दिया उतना किसी अन्य ने नहीं दिया। अपनी आत्मकथा में उन्होंने लिखा है कि – 'मेरे मन में सत्य ही सर्वोपरि है और उसमें अगणित विभूतियों का समावेश हो जाता है। यह सत्य स्थूल वाचिक सत्य नहीं है। यह तो वाणी की तरह विचार का भी है। यह सत्य केवल हमारा कल्पित सत्य नहीं है बल्कि स्वतंत्र, चिरस्थाई सत्य है अर्थात परमेश्वर है।'

महात्मा गांधी के अनुसार- ''परमेश्वर की व्याख्यायें अनगिनत हैं, क्योंकि उसकी विभूतियां भी अनगिनत हैं। ये विभूतियां मुझे आश्चर्यचकित करती हैं, क्षण भर के लिये मुझे मुग्ध भी करती हैं किन्तु मैं पुजारी तो सत्यरूपी परमेश्वर का ही हूँ। यह 'सत्य' अभी मुझे मिला नहीं है लेकिन मैं इसका शोधक हूँ।'' उनका सारा जीवन प्रयास व परिश्रम द्वारा सत्य के साक्षात्कार की चेष्टा है। गाँधी जी के जीवन काल में दो विश्वयुद्ध हुए। हिंसा और नफरतों से भरे विश्व में सत्य, अहिंसा, क्षमा और सहनशीलता के जरिये दमन, शोषण और उससे उपजी घृणा को परास्त करना आसान नहीं था किंतु उन्होंने इस असंभव को संभव कर दिखाया और मानवमात्र की समानता और विश्वशांति की स्थापना जैसे जटिल उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए 'सत्य' और 'अहिंसा' की अवधारणा को एक प्रभावी मार्ग के रूप में स्थापित कर सके। अपने कथन और आचरण की विलक्षण ईमानदारी के कारण ही आज अपने महाप्रयाण के सात दशकों के बाद भी वे मानवता के इतिहास में एक उज्जवल मार्गदर्शक शिखर के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

गाँधी जी केवल भरतीय राष्ट्रीय इतिहास के नायक नहीं हैं बल्कि पश्चिमी दुनिया के लिए भी गाँधी जी ने ईसा के उन संदेशों को पुनर्जीवित किया जो भुला दिए गए थे।

रोम्यां रोला

शिक्षा और गाँधी

डा॰ अनुपमा गर्ग
एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग

आदर्शवादी व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी गाँधी जी से जब किसी सज्जन ने पूछा, ''शिक्षा का उद्देश्य क्या है?'' गाँधी जी ने जबाव दिया 'चरित्र निर्माण'। यह साक्षरता से अधिक महत्व रखता है क्योंकि शैक्षिक ज्ञान इस उद्देश्य को प्राप्त करने का साधन मात्र है। चरित्र की शुद्धि ही ज्ञान पाने का उद्देश्य होना चाहिये''। ऐसे विचारों का समावेश करते हुये गाँधी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में एक वैकल्पिक मॉडल का सूत्रपात किया और इस बुनियादी शिक्षा को उनकी किताब **'वर्धा की शिक्षा योजना'** और **'नई तालीम'** में वर्णित किया गया है। उनका मानना था 'बच्चों और इंसानों के शरीर, मन, और आत्मा के सर्वोत्तम की अभिव्यक्ति ही सच्ची शिक्षा है।' इस प्रकार उनकी बौद्धिक, शारीरिक और आध्यात्मिक क्षमता को बढ़ाकर ही उनका सर्वांगीण विकास संभव है। शिक्षा ऐसी हो जो बच्चों में शांति और नेतृत्व पैदा करे और साथ ही स्वतन्त्रता का अहसास करायें। उन्होंने कहा,'' यदि हम दुनिया में सच्ची शांति चाहते हैं तो हमें बच्चों को शिक्षित करना होगा।''

इसके अतिरिक्त उन्होंने रोजगार परक शिक्षा पर जोर दिया। बच्चों को हस्तशिल्प केंद्रित शिक्षा देकर उनकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति को आत्मनिर्भरता की ओर एक कदम माना। वह कहते हैं, संपूर्ण शिक्षा का संबंध आधारभूत शिल्प से है और छात्रों को चुने हुये शिल्प की शिक्षा से अच्छा शिल्पी बनाकर स्वावलम्बी बनाया जाये। शिल्प की शिक्षा उसे इस प्रकार दी जाये जिससे वह उसके सामाजिक और वैज्ञानिक महत्व को समझे और उस कौशल से शारीरिक श्रम द्वारा जीवकोपार्जन कर सके। उनके अनुसार 'मनुष्य न तो बुद्धि है, और न पूरी तरह से पशु, न तो हृदय न केवल आत्मा।' उनका मानना था कि शरीर, बुद्धि और हृदय तीनों का उचित संतुलित योगदान संपूर्ण और वास्तविक शिक्षा के अर्थशास्त्र का निर्माण करता है।

ज्ञान के लिये जिज्ञासा का होना अति आवश्यक है जो छात्र के लिये ही नहीं वरन् शिक्षक के लिये भी सफलता की कुंजी है। उनका कथन ''जियो ऐसे, जैसे तुम्हें कल मरना है और सीखो ऐसे, जैसे तुम हमेशा जिंदा रहोगे।'' खोजं एवं अनुसंधान के क्षेत्र में ज्ञान जिज्ञासुओं के लिये मंत्र है। इस प्रकार गाँधी जी का शिक्षा दर्शन छात्रों में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, चारित्रिक, व्यवसायिक आधुनिक विकास कर उनको शिखर तक पहुँचाने का प्रयास है।

आने वाली पीढ़ियाँ शायद मुश्किल से ही यह विश्वास कर सकेंगी कि गाँधी जैसा हाड़ मांस का पुतला कभी इस धरती पर हुआ होगा।

अल्बर्ट आइन्सटीन

महात्मा गाँधी: अतीत ही नहीं भविष्य भी ......

डा॰ अलका आर्य
एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग

महात्मा गांधी राष्ट्र के निर्माता थे। उन्होंने आजादी की जंग और भारत के उत्थान में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। गांधी जी की विशेषता यह थी कि उन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को एक दृष्टि प्रदान की। 5 अक्टूबर 1946 को नेहरु को लिखे गये एक पत्र में उन्होंने देश वासियों को पश्चिम का अनुकरण न करने की सलाह देते हुए कहा था कि हमें अपना मार्ग स्वयं ही तलाशना चाहिये। इसी पत्र में उन्होंने यह भी लिखा कि मेरे सपनों का भारत शहरों में नहीं, बल्कि गांव की सोंधी मिट्टी में बसता है। गांधी जी एक बात हमेशा कहा करते थे कि भारत की 80 फीसदी आबादी गांवों में रहती है, इसलिये भारत के विकास के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को आत्मनिर्भर बनाना होगा। गांधी जी करोड़ों लोगों के प्रेरणास्त्रोत रहें हैं। उन्होंने विश्व को अहिंसा का ऐसा मंत्र दिया, जिसकी बुनियाद पर किसी भी आंदोलन को सफल बनाया जा सकता है। उन्होंने पाश्चात्य देशों को साफ-साफ बता दिया था कि हथियारों की होड़ हमें सिर्फ विनाश की ओर ले जा सकती है। अत: हिंसा से किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। वस्तुत: समूचे विश्व में गांधी जी ऐसे महान नेता हैं जिन्होंने विश्वशांति की दिशा में अभूतपूर्व कार्य किये। गांधी जी ने सत्य और अंहिसा पर आधारित अपने व्यक्तिगत जीवन, आश्रम पद्धति तथा सार्वजनिक कार्यप्रणाली द्वारा मनुष्य को जिन श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की ओर उन्मुख करने का प्रयास किया, वही आज मानव सभ्यता को बचाने का एकमात्र उपाय दिखाई देते हैं।

महात्मा गांधी सिर्फ अतीत ही नहीं; बल्कि भविष्य भी हैं। उनके विचारों से पूरा विश्व प्रभावित था, है और आगे भी रहेगा। यही कारण है कि आज भी अनेक देशों में गांधी जी की प्रतिमाएं स्थापित की जा रही हैं तथा उनके विचारों का प्रचार प्रसार करने के साथ उनका अनुसरण करने का आह्वान भी किया जा रहा है। सत्य तो यह है कि गत कई शताब्दियों में यदि किसी एक भारतीय का नाम पूरे विश्व में प्रसारित हुआ है, तो वह केवल गांधी ही हैं। आज सभ्यता और संस्कृति के विघटन के दौर में पूरा विश्व जिस संकट से गुजर रहा है उसमें गांधी ही वैकल्पिक सभ्यता के प्रकाश स्तम्भ के रूप में उभरकर सामने आते हैं। भारत के सनातन मूल्यों के सहज प्रतीक रहे महात्मा गांधी पर हम समस्त भारतवासियों को गर्व है। उनका यह अमृतमय प्रवाह हमारे अचेतन में कहीं न कहीं विद्यमान है। नि:संदेह हम यह कह सकते हैं कि आदर्शों के रूप में गांधी हमारे भीतर हैं और सदैव रहेंगे।

वे महान आदमी थे। वे जिन सिद्धांतों में विश्वास करते थे, उस पर अमल करते हुए शहीद हुए। वे एक श्रेष्ठ मृत्यु को प्राप्त हुए क्योंकि वे अपना कर्तव्य पालन करते हुए मारे गए।

मोहम्मद अली जिन्ना

सांप्रदायिक सद्‌भाव बनाए रखने में उनकी पहल को कृतज्ञता के साथ सभी शांतिप्रिय लोगों द्वारा याद रखा जाएगा। हमें आशा करनी चाहिए कि उनकी पहल सफल होगी।

लियाकत अली खान

गाँधी एवं प्रकृति प्रेम

डा॰ कामना जैन
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विभाग

गाँधी जी के जीवनकाल में पर्यावरण इतनी बड़ी वैश्विक समस्या नहीं थी, जितनी कि वर्तमान में है। किंतु दूरदर्शी बापू को तत्कालीन परिस्थितियों, मानव व्यवहार एवं विकास के नाम पर बढ़ते कदमों को देखकर तभी अनुमान हो गया था कि प्रकृति एवं पर्यावरण की सुरक्षा पर खतरा बढ़ता जा रहा है। अपने समय की प्रचलित सभी समस्याओं पर गाँधी ने ना केवल विचार किया वरन् जनचेतना जागृत करने का भी अथक प्रयास किया। उनकी जीवन शैली एवं आश्रम इसके गवाह हैं।

डा॰ एस॰ राधाकृष्णन् के अनुसार "गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका या भारत में जो आश्रम या समुदाय स्थापित किए वे ऐसे सार्थक केंद्र थे जहाँ समुदाय का प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य स्थापित करके रह सकता था। गाँधी द्वारा संस्थापित सामुदायिक जीवन, श्रमिक जीवन, वृक्षारोपण, कृषि, साधारण जीवन और शिल्प का समायोग था"।

मानव व प्रकृति के बीच संबधों को लेकर गाँधी जी के विचार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एवं 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' की वैदिक अवधारणा से प्रेरित हैं, जिसमें उन्होंने पृथ्वी को सभी जीवों का एक बड़ा परिवार माना है। साथ ही यह भी माना कि यह प्रकृति माँ के समान हमारा पालन पोषण करती है, अतः पुत्र की भाँति हमें धरती माँ की रक्षा करनी चाहिए। उनका कहना था प्रकृति हर व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति के लायक पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराती है, लेकिन वह किसी के लोभ की पूर्ति नहीं कर सकती। साथ ही प्राकृतिक संसाधन समूची मानवता के लिए प्रकृति का वरदान है। जोकि वर्तमान पीढ़ी के पास भावी पीढ़ियों की धरोहर स्वरूप है, अतः इसका प्रयोग संतुलित होकर ही करना चाहिए। गाँधी जी औद्योगीकरण के खिलाफ भी इसलिए ही थे क्योंकि इससे बेरोजगारी के साथ साथ सौर मण्डल में भौतिक एवं रासायनिक प्रदूषण भी बढ़ रहा है। पूर्ण रूप से शाकाहारी होना, खादी वस्त्र धारण करना, बीमार होने पर आराम, पानी द्वारा (हाइड्रोथेरेपी) तथा सादा भोजन लेकर शरीर को पुनः संतुलित करना आदि भी उनके प्रकृति प्रेम एवं मानव जीवन में प्रकृति के महत्व को समझाने के लिए पर्याप्त हैं।

हमारे युग का लगभग सारा का सारा जोर समाज सुधार की भौतिक परिकल्पनाओं और युद्ध के तरीकों से युद्ध को रोकने की योजनाओं में लग रहा है। क्या यह अच्छा नहीं कि उस समाजसुधारक (गाँधी जी) की आमतर पद्धति को अपनाया जा सके, जिसने खुद सारे जीवन में अछूतों के सुख और उनके मानवीय मान का प्रचार किया, जो भारत में ब्रिटिश राज्य का विरोध होने के बावजूद अंग्रेज जाति को भली भाँति पहचानता और प्रेम करता था; जो खुद एक कट्टर हिन्दू था, लेकिन फिर भी ईसाइयत और इस्लाम दोनों से बौद्धिक सम्बन्ध स्थापित करता था। जो शान्तिवादी था और जिसका विश्वास था कि शान्ति मानवीय आत्मा में युद्ध के प्रति घृणा उत्पन्न करके ही स्थापित की जा सकती है।

एल.एस.एम टी

गाँधी जी की सर्वोदयी समाज की परिकल्पना

डा॰ किरन बाला
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग

जब तक समाज में मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण, एक देश का दूसरे देश पर वर्चस्व की होड़, गला-काट प्रतिस्पर्धा, क्रूरता, हिंसा व्याप्त है, प्रत्येक उस क्षण गाँधी जी के विचार प्रासंगिक हैं। यही वजह है कि आज वैश्विक स्तर पर गाँधी जी सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। गाँधी जी ने इन सभी समस्याओं को आज से काफी समय पहले चिन्हित करते हुए सर्वोदयी समाज की परिकल्पना प्रस्तुत की। यह संकल्पना गाँधी जी के जेहन में 1904 में दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान रस्किन की पुस्तक 'अन टू दिस लास्ट' पढ़ते हुए आयी। सर्वोदय अर्थात सभी का उदय,पहले दर्जे से लेकर अन्तिम दर्जे तक की रक्षा। उन्होंने कहा था कि यह नहीं होना चाहिए कि मुट्ठी भर लोग अमीर हों और करोड़ो लोग वायु व प्रकाश हीन गन्दी झोपड़ी में रहने को मजबूर हों।

सर्वोदयी समाज की स्थापना के लिए ग्राम स्वराज सहकारिता, पूंजीवाद की समाप्ति, विकेन्द्रीकरण, बुनियादी शिक्षा, विचारों की आधुनिकता, श्रम का महत्व इत्यादि आवश्यक तत्व हैं, गांधी जी का विचार था कि गाँव की कृषि संरक्षता तथा सहकारिता के माध्यम से की जाये। प्राथमिक शिक्षा पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि दस्तकारी सिखाई जानी चाहिए। सर्वोदयी समाज में शान्ति, सत्ता, पूंजी, ऊर्जा का केन्द्रीकरण कुछ ही हाथों में न होकर अधिक के पास हो क्योंकि केन्द्रीकरण जन समाज के शोषण का आधार है। गाँधी जी ने कहा था कि शारीरिक श्रम को बौद्धिक श्रम के समान माना जाये ताकि शारीरिक श्रम करने वाला अपने आपको हीन न समझे, अत्यन्त पिछड़े, शोषित, प्रताड़ित, वर्ग के उत्थान के लिए विचार करना तथा रुढ़ियों, अन्धविश्वास, कुरीतियों का विरोध करना विचारों की आधुनिकता है। बढ़ते भौतिक आकर्षण के सन्दर्भ में गाँधी जी ने स्पष्ट किया कि आवश्यकताएं मात्र कम न हो सम्यक हो। सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए गाँधी जी के समतावादी समाज का विचार, आज भी अपेक्षित है। जिसके लिए उन्होंने 'मेरे सपनों के भारत' पुस्तक में लिखा था कि मैं एक ऐसे भारत के लिए कोशिश करूँगा जिसमें ऊँच-नीच वर्ग का भेद न हो विविध सम्प्रदायों में मेल जोल होगा, अस्पृश्यता, नशीली चीजों के अभिशाप के लिए स्थान न हो, स्त्रियों के वही अधिकर होंगे जो पुरुषों के लिए होंगे। सारी दुनिया के साथ हमारा सम्बंध शान्ति का होगा। न तो हम किसी का शोषण करेंगे और न ही किसी के द्वारा अपना शोषण होने देंगे।

नि:सन्देह वे उस धातु के बने हुए हैं, जिस धातु से सूरमा और बलिदानी लोगों का निर्माण होता है बल्कि इतना कहना भी कम ही होगा, उनमें वह अद्‌भुद आत्मिक शक्ति विद्यमान है जो उनके इर्द-गिर्द के लोगों को भी सूरमा और बलिदानी बना देती है।

गोपाल कृष्ण गोखले

सारा संसार उनके जीवित रहने से सम्पन्न था और उनके निधन से वह दरिद्र हो गया।

माउंट बेटन

कला और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

डा० अर्चना चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग

कला हर तरह की हिंसा, चाहे वह दैहिक हो या मानसिक, उसका प्रतिकार है। हिंसा मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देती और ना ही समाज को रहने लायक छोड़ती है। गाँधी ने कहा था कि जहाँ अंहिसा है वहाँ सत्य है और जहाँ सत्य है वहाँ ईश्वर है। कला को मानवीय सत्य की रक्षा का ध्येय लेकर चलने का समय आ गया है। गाँधी जी का जीवन सत्य, अंहिसा, सादगी और भाईचारे पर आधृत था, इसलिए कला के सम्बन्ध में उनका विचार भी सादगी, सरलता और जन-मानस से सहज जुड़ने की प्रक्रिया के अनुकूल था। वे कला को सत्यं, शिवं, सुन्दरम् में सुन्दरम् के स्थान पर रखते थे उन्होंने कहा कि 'एक अर्द्ध सुरक्षित राष्ट्र न कला की सोच सकता है, न धर्म की, न संगठन की। करोड़ों भुखमरी ग्रस्त लोगों के लिए जो भी उपयोगी है, मेरी राय में वही सुन्दर हैं।

महात्मा गाँधी टाल्सटाय के कला सम्बन्धी विचारों से सहमत थे उन्होंने अपनी कला पुस्तक 'व्हाट इज आर्ट' में कहा है कि आजकल ऐसी कोई कला सच्ची कला नहीं हो सकती, जो जनता के हाथों द्वारा प्रस्तुत न की गयी हो। गाँधी जी का कथन था कि मशीनयुग की दौड़ में हृदय की सच्चाई को मेहनत के हाथों द्वारा प्रकट करना ही असली कला है। उनकी दृष्टि में चर्खा और खादी इस कला के प्रतीक थे। स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग उनकी दृष्टि में लोक जीवन और लोक कला को बढ़ावा देना था। गाँधी जी गाँव के गरीबों तक कला और संस्कृति के प्रसार के पक्ष में थे इसलिए आदिवासी कलात्मक उपकरणों से उनका गहरा लगाव था। उनका विचार था कि 'मेरी कल्पना में आदर्श गाँव में ग्राम कवि, दस्तकार, वास्तुशिल्पी, भाषाविद्, शोधकर्त्ता आदि सभी होंगे। वहाँ एक ग्राम रंगशाला भी होगी जो सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र बनेगी।'

भारतीय लोक कला के पुनरुत्थान एवं जनमानस की कला को बढ़ावा देने के पक्ष में गाँधी जी सदा रहे। झोपड़ियों में रहने वाले गाँधी अपने आश्रम की झोपड़ियों एवं कच्चे घरौंदों को गोबर मिट्टी से लिपवा कर कलात्मक मण्डपों एवं चित्रों से सुसज्जित करवाते थे जिससे उनका लोक कला के प्रति लगाव सहज प्रतीत होता है इतना होने पर भी वे कला को गौण समझते हुए कहा करते थे कि 'हमें चाहिए कि हम पहले जीवन की आवश्यक वस्तुएँ जुटाकर जनसाधारण को उपलब्ध करावें और जीवन को अंलकृत करने वाली और शालीन बनाने वाली चीजें स्वयं आ जायेंगी।' पश्चिम के अनेक बड़े कलाकारों के उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि पिकासो जैसे कलाकार अफ्रीका की ही आदिवासी कला से प्रभावित हुए और कला जगत को नवीन मोड़ दिया।

मानवीय इतिहास में यह अनोखी बात है कि एक अकेला व्यक्ति एक ही समय योद्धा, मसीहा और संत तीनों था और उससे भी अधिक वह विनम्र और मानवीय था।

घनश्याम दास बिरला

हमें महात्मा गाँधी के बताए रास्ते पर अवश्यक चलना चाहिए। वे एक विशेष मिशन के साथ आए थे। हमें उनके अधूरे काम को पूरा करना होगा।

जय प्रकाश नारायण

महात्मा गांधी जी के विचारों मे नारी दर्शन

अंजली प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग

भारतीय समाज में वैदिक काल से ही नारी को पूजनीय स्थान प्राप्त होने से उन्हें सामाजिक रूप से जो समाज में नारी को अधिकार मिलते हैं वे किसी ना किसी कर्तव्य या धर्म के पालन से प्राप्त होते हैं इसलिए सामाजिक आचार व्यवहार के नियम स्त्री एवं पुरुष दोनों को आपसी सहमति से तय कर उन नियमों का पालन करने के प्रयत्न करते रहने से एक सभ्य समाज का निर्माण होता है। एक समाज सुधारक के रूप मे गाँधी जी ने स्त्री उत्थान को सर्वोपरि माना एवं कहा कि स्त्रियां किसी भी रूप में पुरुषों से कम नहीं है। गाँधी जी ने महिलाओं को सशक्त करने के लिए नारी शिक्षा पर बल दिया एवं आग्रह किया कि महिलाओं को अपनी गरिमा बनाए रखने के लिए आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना आवश्यक है। साथ ही महिलाओं को सामाजिक जीवन में भाग लेने एवं समुदाय के नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास में योगदान देने की सलाह दी। वे पर्दा प्रथा एवं दहेज प्रथा के विरोधी थे। वे युवाओं को इस बात के लिए सदैव प्रेरित करते रहे कि वे अपने विवाह में दहेज की मांग ना करें। गांधी जी का मानना था कि किसी भी समाज में स्त्रियों कि उन्नत दशा को उस समाज के विकास का द्योतक माना जाता है इसलिए गांधी जी ने भारत में प्रथम नारी आन्दोलन चलाया ताकि सामाजिक एवं धार्मिक रूप से महिलाओं की स्थिति को सुधारा जा सके क्योंकि किसी भी देश के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं नैतिक विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उनका मानना था कि विकास की धारा से यदि स्त्री को ना जोड़ा गया तो विकास की परिकल्पना कभी पूरी नहीं हो सकेगी। अत: वे सदा स्त्रियों की वकालत करते थे और उनका यह मानना भी था कि स्त्रियों पर ऐसा कोई कानूनी प्रतिबंध नहीं लगाना चाहिए जो पुरुष पर ना लगाया गया हो।

गांधी जी लैंगिक समानता को महत्व देते थे इसलिए वे पुत्रों एवं कन्याओं में भेद ना करने तथा कन्याओं की शिक्षा पर ध्यान देने को आवश्यक मानते थे। गांधी जी स्त्री एवं पुरुष दोनों के समान अधिकार में विश्वास रखते थे। वह यह मानते थे कि स्त्री को अबला कहना अनुचित है, इसलिए वे यह भी चाहते थे कि स्त्रियों का उनकी जनसंख्या के अनुपात में विधान सभाओं एवं पंचायतों में प्रतिनिधित्व होना ही चाहिए। जिससे महिलाओं में भी राजनैतिक एंव कानूनी जागरूकता उत्पन्न हो सके और एक नव भारत का निर्माण हो।

मैंने गाँधी जी की राजनैतिक साफगोई और इस्पात जैसी दृढ़ इच्छा शक्ति के लिए हमेशा उनका सम्मान किया है और उनकी प्रशंसा की है।

चार्ली चैप्लिन

महात्मा गाँधी देश और दुनिया को अंधेरे से उबारने वाली रोशनी की इकलौती किरन थे।

खान अब्दुल गफ्फार खान

प्रेरक प्रसंग

भारत माँ का बेटा

1919 के जलियाँवाला बाग हत्या कांड के बाद कांग्रेस का अगला अधिवेशन अमृतसर में हुआ। अधिवेशन में जलियाँवाला बाग की घटना की निंदा का प्रस्ताव लाया गया। गाँधी जी ने इसमें एक अलग वाकये में मारे गये अंग्रेजों और एक महिला अंग्रेज डॉक्टर से हुई बदसलूकी के लिये भी निदां प्रस्ताव जुड़वाया। अधिवेशन में हंगामा हो गया। किसी ने कहा कि यह भारत माँ के किसी बेटे का प्रस्ताव नहीं हो सकता। गाँधी जी ने शांत भाव से जबाव दिया – 'यह भारत माँ के ही बेटे का प्रस्ताव हो सकता है'।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा

साबरमती आश्रम.... सवेरे-सवेरे महात्मा गाँधी ने काका कालेलकर से एक लोटा पानी मंगवाया था। गाँधी जी ने उस एक लोटे पानी के हाथ साफ किये, मुँह धोया, पैरों का प्रक्षालन किया और बचे हुए पानी से अपना छोटा सा तौलिया भी धो लिया। यह सब देखकर काका कालेलकर बोले, 'बापू आपके सामने साबरमती नदी बह रही है और आप पानी की इतनी कंजूसी करते हैं। गाँधी जी ने कहा 'साबरमती नदी पर सिर्फ मेरा नहीं देश के करोड़ो लोगों का अधिकार है। यदि मैं अपनी आवश्यकता से अधिक पानी का उपयोग करता हूँ तो मुझे चोरी लगती है।

यह प्रसंग ईशोपनिषद के ऋृषिकवि का स्मरण कराता है जिसने कहा था-

तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृध: कस्य स्विद धनम्। अर्थात त्याग भाव से भोग तो कर परन्तु किसी अन्य का धन मत छीन।

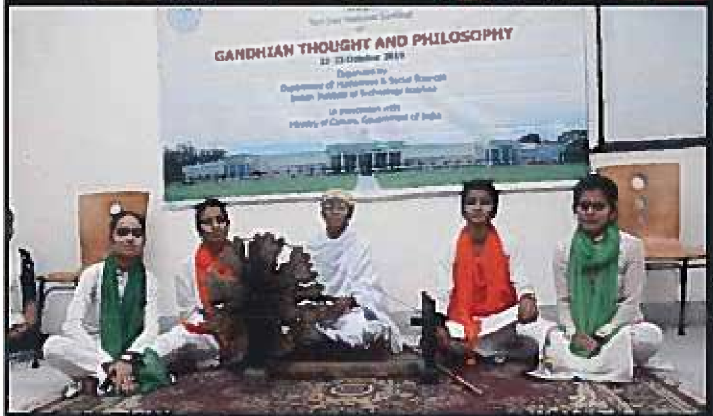
GANDHIAN THOUGHT AND PHILOSOPHY

लोगों के सफाई के प्रति जागरूक कि

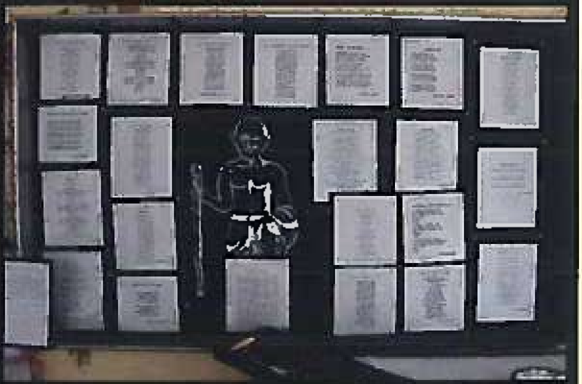

संयोजन : कु० दीपा, बी०ए० VI सेम०